एक दिन वो भोले भण्डारी .....

एक दिन वो भोले भण्डारी, बन कर के ब्रज नारी,
गोकुल में आ गये, हो गोकुल में आ गये ।
पार्वतीजी मना के हारी, ना माने त्रिपुरारी ।।
गोकुल में .....

पार्वतीजी से बोले, मैं भी चलूंगा तेरे साथ में,
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूंगा तेरे साथ में ।
रास रचेगा ब्रज में भारी, हमें दिखा दो प्यारी ।।
गोकुल में .....

ओ मेरे भोले स्वामी, कैसे ले जाऊँ अपने साथ में,
मोहन के सिवा वहाँ, कोई पुरूष ना आए रास में ।
हँसी करेगी ब्रज की नारी, मानो बात हमारी ।।
गोकुल में .....

ऐसा बनादो मुझे, कोई ना जाने इस राज को,
मैं हूँ सहेली तेरी, ऐसा बताना ब्रजराज को ।
लगा के बिंदिया, पहन के साड़ी, चाल चले मतवाली ।।
गोकुल में .....

हँस के सती ने कहा, बलिहारी जाऊँ इस रूप में,
एक दिन तुम्हारे लिये, आए मुरारी इस रूप में ।
मोहनी रूप बनाया मुरारी, अब है तुम्हारी बारी ।।
गोकुल में .....

देखा मुरारी ने जब, समझ गये वो सारी बात रे,
ऐसी बजाई बंशी, सुध–बुध भूले भोलेनाथ रे ।
सिर से खिसक गई जब साड़ी, मुसकाये गिरिधारी ।।
भोले जी शरमा गये, गोकुल में .....

ओ मेरे भोले बाबा, काशी कैलाश तेरो धाम है,
गोकुल में आने से बाबा हुआ गोपेश्वर तेरो नाम है ।
भक्त–मण्डली अरज गुजारे, राखो लाज हमारी ।।
गोकुल में .....